महाभारत के रूप → अनेक विद्वानों का अभिमत है कि महाभारत न किसी एक व्यक्ति की रचना है और न ही एक कालखण्ड में लिखी गई है। इसमें अधिसंख्य पाश्चात्य विद्वान् और कतिपय भारतीय विद्वान् भी सम्मिलित हैं। इन लोगों की मान्यता है कि प्रारम्भ में मूलकथा संक्षिप्त थी। इसी में बाद में परिवर्तन और परिवर्धन किया गया। इन विद्वानों की दृष्टि में एक लाख श्लोकों से युक्त काव्य की रचना एक व्यक्ति की क्षमता से बाहर की चीज है।

इन विद्वानों के अनुसार महाभारत के विकास के तीन-चरण हैं। ये हैं - जय, भारत और महाभारत। संक्षेप में इनके विषय में लिखा जा रहा है—

(क) जय → इसे महाभारत का मूल कहा गया है। पाण्डवों की विजय यात्रा का वर्णन करने के कारण संभवतः ग्रन्थ का यह नामकरण हुआ। नारायण, नर और सरस्वती को नमस्कार कर इस ग्रन्थ को पढ़ने का विधान है -

"नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयं उदीरयेत्।

अनेक प्रमाणों के आधार पर विद्वानों ने यह प्रमाणित किया है कि इसमें मात्र 8800 श्लोक थे जिसमें आख्यान, उपाख्यान आदि का सर्वथा अभाव था। इसके वक्ता वेदव्यास तथा श्रोता वैशम्पायन हैं।

(ख) **भारत** → विद्वानों ने अपने अनुसंधानों से यह प्रमाणित करने की चेष्टा की है कि जय के अनन्तर विकसित होने पर इस ग्रन्थ को 'भारत' अभिधान प्राप्त हुआ। इसे इस रूप से प्रमाणित किया गया है - अर्जुन के प्रपौत्र जनमेजय ने जो बृहद् नागयज्ञ किया था उसमें व्यास उपस्थित थे। इस अवसर पर जनमेजय के प्रार्थना करने पर व्यास की आज्ञा से उनके शिष्य वैशम्पायन ने कौरवों - पाण्डवों से सम्बन्धित 'जय' नामक

महाकाव्य को सुनाया। कथा को सुनते हुए जनमेजय ने बीच-बीच में कुछ जिज्ञासाएं कीं, जिसका समाधान वैशम्पायन ने अपनी ओर से किया। वैशम्पायन की ये समाधानपूर्ण बातें भी आगे चलकर मूल 'जय' काव्य में मिल गई। यह व्यास के ग्रन्थ का दूसरा संस्करण था जिसका नाम 'भारतसंहिता' पड़ा। इसके श्लोकों की संख्या 24000 थी और यह भी आख्यानों से रहित था। यह ग्रन्थ भारतवंशी कौरवों तथा पाण्डवों के युद्ध का वर्णन परक ग्रन्थ था।

(ग) महाभारत – तृतीय काल में द्वितीयकालीन विस्तृत ग्रन्थ सौति ने शौनक को सुनाया जब शौनक द्वादशवर्षीय यज्ञ कर रहे थे। इस समय शौनक ने कुछ प्रश्न किए जिसका उत्तर सौति ने दिया। ये सौति ऋषि नागयज्ञ में वैशम्पायन प्रोक्त 'भारतसंहिता' को सुन चुके थे। अतएव शौनक के प्रार्थना करने पर सौति ने उस कथा को तो सुनाया ही, साथ ही साथ अपने विचारों एवं उदाहरण में दूसरे उपाख्यानों का वर्णन भी अपनी ओर से करते गए। 'हरिवंश' वाला अंश भी उन्होंने इस कथा के साथ जोड़ दिया गया। इसप्रकार तृतीय कालखण्ड में इसका कलेवर अत्यधिक बढ़ गया और इसे महाभारत नाम से अभिहित किया गया। इसमें एकलक्ष श्लोक हैं। जिन उपाख्यानों को सौति ने इस ग्रन्थ का भाग बनाया उनमें से कुछ तो प्राचीन ऋषि तथा राजाओं के जीवन से सम्बद्ध होने के कारण घटना प्रधान हैं, कतिपय ऐतिहासिक होने से प्राचीन इतिहास की अमूल्य निधि हैं, कतिपय तत्कालीन लोककथा के ही साहित्यिक संस्करण हैं। अध्यात्म, धर्म और नीति की विशद् विवेचना ने इस महाभारत को भारतीय धर्म और संस्कृति का विशाल विश्वकोष बना दिया है।

विद्वानों का अभिमत है कि मूलावस्था

में महाभारत को 'इतिहास, पुराण या आख्यान की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता था। आजकल इसे आचारविषयक उपदेशों का विश्वकोष माना जाता है।

परन्तु ऐसे भी विद्वानों की कमी नहीं है जो दृढ़ता के साथ इस बात को स्वीकार करते हैं कि महाभारत एक ही लेखक के द्वारा निर्मित हैं। इसमें जे. डालमेन, ओल्डनबर्ग और सिलवियन जैसे पाश्चात्य विद्वान भी सम्मिलित हैं। भारतीय विद्वानों में सेठ कन्हैयालाल पोद्दार और डॉ. कुँवरलाल व्यासशिष्य सम्मिलित हैं। सभी मतों के विश्लेषण के अनन्तर इन्हीं विद्वानों का मत प्रमाणित प्रतीत होता है। व्यासशिष्य के अभिमत का उल्लेख आगे किया जा रहा है।

डॉ. व्यासशिष्य के अनुसार महाभारत में स्वयं इस बात का संकेत है कि व्यासजी ने ग्रन्थ के दो संस्करण किये। प्रथम संस्करण में उपाख्यानों सहित एक लाख श्लोक थे जिसे शतसाहस्री संहिता भी कहा जाता है। बिना उपाख्यानों के 24000 श्लोकों की दूसरी संहिता बनाई जिसको केवल भारत संहिता कहा गया-

"इदं शतसहस्रं तु श्लोकानां पुण्यकर्मणाम्।
उपाख्यानैः सह ज्ञेयमाद्यं भारतमुत्तमम्॥
चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे भारतसंहिताम्।
उपाख्यानैर्विना तस्माद् भारतं प्रोच्यते बुधैः॥"
आदिपर्व/1/101-02

आश्वलायनमुनि और उनके गुरुकुलपति शौनक भारतयुद्ध से लगभग 200 वर्ष पश्चात् हुए। ये शौनक वे ही हैं, जिनके दीर्घसत्र में उग्रश्रवासौति ने महाभारत का प्रवचन किया था। शौनक ने अपने गृह्यसूत्र में लिखा है-

"सुमन्तुजैमिनिवैशम्पायनपैलसूत्रभाष्यभारतमहाभारतधर्माचार्याः॥"

इसी प्रकार आश्वलायन गृह्यसूत्र में उल्लिखित है-

"सुमन्तुजैमिनिवैशम्पायनपैलसूत्रभाष्यभारतमहाभारतधर्माचार्याः॥"

Scanned with CamScanner

इन उक्तियों में- सुमन्तु, जैमिनि, वैशम्पायन और पैलमुनि सूत्रग्रन्थ, भाष्य, महाभारत, भारत के आचार्य थे- ऐसा बताया गया है। इससे स्पष्ट है अपने गुरु से चारों वेदाचार्यों ने भारतसंहिता और महाभारतसंहिता दोनों का ही अध्ययन किया था। यदि व्यासशिष्यों के समय ~~महाभारत नहीं~~ शतसाहस्रीसंहिता नहीं होती तो वे महाभारताचार्य कैसे कहला सकते थे। शौनक और आश्वलायन व्यास के प्रशिष्य थे। भला वे सत्य से क्यों अपरिचित रहते। शौनक ऋषि के वाक्यों के सम्मुख कीथ या विण्टरनित्स प्रभृति वचनों का क्या मूल्य है?

इस महाभारत में वैशम्पायन के 'चारकश्लोक' और उग्रश्रवासौति के उपोद्घात जुड़कर ही वर्तमान महाभारत का रूप बना, इसलिए महाभारत में दो मंगलाचरण मिलते हैं – सौतिकृत मंगलाचरण उत्तरकालीन है –

"नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥"

आगे इसी अध्याय में कृष्णद्वैपायनकृत प्राचीन मंगलाचरण मिलता है–

"आद्यं पुरुषमीशानं पुरुहूतं पुरुष्टुतम्।
ऋतमेकाक्षरं ब्रह्म व्यक्ताव्यक्तं सनातनम्॥
मंगल्यं मंगलं विष्णुं वरेण्यमनघं शुचिम्।
नमस्कृत्य हृषीकेशं चराचरगुरुं हरिम्॥"

वेदव्यासकृत मंगलाचरण में प्रायः सभी शब्दों में वैदिक शब्दों की झलक है - पुरुष, ईशान, पुरुहुत, पुरुष्टुत, विष्णु, हृषीकेश - इत्यादि सभी पद ईश्वर के लिए वेद में आये हैं। अतः इस मंगलाचरण की प्राचीनता स्वतः सिद्ध है।

Scanned with CamScanner

जिन 8800 श्लोकों ~~को उद्धृत~~ का उल्लेख करते हुए महाभारत के विकास के तीन चरण बताये गए हैं, उसका रहस्य तो कुछ और ही है। वस्तुतः ये 8800 पद्य वस्तुतः कूट पद्य हैं न कि जयकाव्य की श्लोकसंख्या। कहीं भी 8800 श्लोकों को 'जय' काव्य नहीं कहा गया है। पाश्चात्य विद्वानों ने बिना किसी आधार के 8800 श्लोकों का जय काव्य से सम्बन्ध स्थापित कर दिया है। महाभारत से ज्ञात होता है कि ये कूट पद्य थे। व्यास-गणेश संवाद से भी संकेत मिलता है कि व्यास ने बीच-बीच में कूट पद्य दिये हैं। कहा है-

"अष्टौ श्लोकसहस्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च।
अहं वेद्मि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा॥"

Scanned with CamScanner